स्नातक प्रतिष्ठा - प्रथम वर्ष

दिनांक - WEDNESDAY 09 APRIL

14 MAY

प्रश्न - पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर विचार कीजिए

उत्तर :- आदिकाल के रासो काव्य के क्रम में पृथ्वीराज रासो का नाम न आये यह सम्भव ही नहीं है। पृथ्वीराज रासो का नाम आते ही यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि क्या यह रचना प्रामाणिक है, इसमें वर्णित घटनाएँ और पात्र क्या ऐतिहासिक और प्रामाणिक हैं या काल्पनिक।

मैं मानता हूँ कि यह रचना बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह ढाई सौ पृष्ठों और 69 सर्गों में विभाजित एक वृहत् काव्य महाकाव्य है। इसकी प्रामाणिकता को लेकर दो खेमा बना हुआ है। एक इसे प्रामाणिक मानता है और इसके रचनाकार चन्दबरदाई को उनका समकालीन मानते हैं। चन्द को वे लोग पृथ्वी के पृथ्वीराज के मित्र मानते हैं। इनमें कुछ विद्वानों के नाम निम्नलिखित हैं - ① डॉ० श्यामसुन्दर दास, ② मोहनलाल विष्णुलाल पाड्या आदि इसे प्रामाणिक मानते हैं।

दूसरे पक्ष के विद्वान जैसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ० बूलर, रामकुमार वर्मा इसे अप्रामाणिक मानते हैं। इन विद्वानों के अनुसार चन्दबरदाई को पृथ्वीराज के समकालीन

अनुसार नरोत्तम दास को कोई कार्य नहीं मानते हैं। इनके अनुसार घटनाएँ अप्रामाणिक मानते हैं और रासो में वर्णित घटनाएँ हैं। इतिहास विरुद्ध इसमें वर्णित घटनाएँ हैं। तिथियों भी गलत हैं। कुछ और विद्वानों ने भी इसे प्रामाणिक माना है, वे हैं डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी और डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी। इनके अनुसार मूल पृथ्वीराजरासो में बहुत से क्षेपक मिले हुए हैं, इसलिए ये अप्रामाणिक लगते हैं। वर्णित कुछ घटनाएँ क्षेपक लगते हैं।

इस रचना की सात प्रतियाँ मिलती हैं जिसमें तिथियों में अंतर मिलते हैं। एक दूसरी रचना पृथ्वीराजविजय मिली है जिसमें वर्णित तिथियाँ इतिहास से मिलती हैं।

अप्रामाणिकता के कई आधार इन विद्वानों ने खोजे हैं। ये आधार हैं —

(क) घटना वैषम्य :— शिलालेखों, ताम्रपत्रों, और पृथ्वीराजविजय में पृथ्वीराजरासो से भिन्नता मिलती है। वंश सम्बन्धी भिन्नता, कल्पित नाम, पृथा की चर्चा भी गलत है। कई राजाओं के

12 SATURDAY APRIL

MAR 14

अतः कि ग्रंथ में नहीं मिलती है, ये बात सही है। रासो का छोटा रूप प्रामाणिक है परंतु, रासो का छोटा रूप प्रामाणिक है परंतु बड़े अंशों में ही अप्रामाणिकता के दर्शन होते हैं। ये बात सही है कि साहित्य इतिहास नहीं होता है, उसमें कल्पना का समावेश आवश्यक है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि कृति का पृथ्वीराज का दरबारी मानना सब स्वीकारते हैं। पृथ्वीराज चंदवरदाई की रचना है। जल्हण द्वारा रासो की पूर्णता की करने की बात की स्वीकृति सब देते प्रक्षिप्तता का समावेश इसमें हुआ ही है जिससे भाषा और छंद विकृत हो गये हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि ऐतिहासिक न तो साहित्यिक दृष्टि से पृथ्वीराजरासो सुंदर भी प्रामाणिक ग्रंथ है।

13 SUNDAY

कुमार रजनीकान्त रंजन

1-5

2014